हिंदी विभाग, हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खलीलाबाद एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में **स्त्री विमर्श और समकालीन हिंदी कथा साहित्य विषय** पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ सुप्रिया पाठक, स्त्री अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के व्यख्यान की विभिन्न हिंदी समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टिंग –

सूर्य 5:03 (अस्त) 6:25 (उदय-कल)
तापमान 25.8 (अधि.) 12.9 (न्यून.)
आर्द्रता 100% (अधि.) 49% (न्यून.)

संतकबीरनगर जागरण

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की जरूरत

- स्त्री की छवि को ठीक से पेश करना आवश्यक : प्रो. चितरंजन
- जड़ता मिटाने का रास्ता साहित्य से खोजने की जरूरत : प्रो.सुरेंद्र दूबे

जागरण संवाददाता, संतकबीर नगर : शुक्रवार को खलीलाबाद स्थित हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और हिंदी विभाग के तत्वाधान में स्त्री विमर्श और समकालीन हिंदी कथा साहित्य विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति समेत अनेक विद्वानो ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राजनैतिक पहल की आवश्यकता जताई।

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने बतौर मुख्य अतिथि अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि विचार धारा और कर्म में हमेशा अंतर रहता है। स्त्री के साथ अन्याय व अत्याचार हुआ है परंतु भारतीय समाज की विचारधारा और भारत का बहुसंख्यक समाज स्त्री के विरोध में नहीं है। साहित्य भी स्त्री के विरोध में नहीं है। समाज को विचार और कर्म में समानता लाने के साथ ही स्त्री पुरुष संबंधो के बारे में संतुलित ढंग से सोचने की जरूरत है। उन्होंने स्त्री को आत्मनिर्भर और अधिकार संपन्न बनाने के लिए सामाजिक व राजनैतिक पहल जरूरी बताया । विशिष्ट अतिथि के रूप में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो चितरंजन मिश्र ने कहा कि विमर्श का आशय एक गहरे बदलाव से होता है। सभी विमर्श में एक नए समाज को गढ़ने की आकांक्षा होती है। इसीलिए स्त्री अपने अस्तित्व को लेकर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सशंकित रहती है। आज स्त्री की वही छवि गढ़ी जा रही है जो बाजार गढ़ रहा है। हमारे व्यवहार व संस्कार में जब तक स्त्री समानता व अधिकारों की बात नहीं होने तक विमर्श बेमानी होगी।

एचआरपीजी कालेज में संगोष्ठी को संबोधित करती डा. सुप्रिया पाठक व मंचासीन आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रो. सुरेंद्र दूबे, प्रो. चितरंजन मिश्र। जागरण

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा के स्त्री अध्ययन विभाग की अध्यक्ष प्रो. सुप्रिया पाठक ने कहा कि स्त्री के मुद्दे पर सार्थक लेखन की जरूरत है। हिंदी कथा साहित्य में स्त्री को उसी रूप में शामिल करना चाहिए जिस रूप में उनकी स्थिति हो। उन्होंने कहा कि स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य का शार्टकट नहीं है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सुरेन्द्र दुबे ने कहा कि किसी भी समाज में कोई खोट है तो समाज के भीतर से ही उसकी आवाज उतनी चाहिये। हमे अपनी जड़ताओं को मिटाने का रास्ता अपनी विचारधारा से खोजना होगा पश्चिम के चिंतन से नहीं। उन्होंने कहा कि हमारे धर्म साहित्य और दर्शन ने हमेशा स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई लड़ी है। तीन तलाक पर विमर्श का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि महिला अधिकारों की चर्चा महिलाओं के भीतर से शुरू हुई है। धर्म का हवाला देकर हम महिलाओं की आवाज दबा नहीं सकते। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। महाविद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया। प्राचार्य डा.अजय कुमार पाण्डेय ने अतिथियो को अंगवस्त्र व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डा.डी एन पाण्डेय, डा.डी डी सिंह, पूर्व प्राचार्य डा. अर्जुन राम त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य प्रो. वीरेंद्र सिंह, डा. सूर्यनाथ पांडेय, डा. वी के अग्रवाल, डा.प्रताप विजय, डा.पूर्णेश नारायण सिंह, डा.अमित गौतम, डा.वीके ओझा, डा.अनुभव श्रीवास्तव, डा.हेमंत गौतम,डा.मंजू मिश्रा डा.अमरनाथ पाण्डेय, अकेंद्रमणि, कल्याणी शर्मा, सरिता राय सहित महाविद्यालय के छात्र-छात्रा तथा शोधार्थी मौजूद रहे।

संगोष्ठी मे आज

संतकबीर नगर : संगोष्ठी के दूसरे दिन सुबह नौ बजे से एक बजे तक शोध पत्र का वाचन होगा। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर सदानंद गुप्त पूर्व आचार्य हिंदी विभाग दीदउ गोविवि करेंगे। इसमे प्रोफेसर रमेश चंद्र त्रिपाठी आचार्य लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, डा. रंजना जायसवाल साहित्यकार गोरखपुर, प्रोफेसर दीपक प्रकाश त्यागी हिंदी विभाग दीदउ गोविवि वक्ता होंगे। समापन सत्र मे कुलपति बुंदेलखंड सुरेंद्र दूबे बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहेंगे। प्रोफेसर कैलाश देवी सिंह पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ विशिष्ट अतिथि व प्रोफेसर रामदेव शुक्ल साहित्यकार एवं पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग दीदउ गोविव होंगे। अध्यक्षता रजनीकांत पांडेय कुलपति सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर करेंगे।

साठ शोध पत्र : राष्ट्रीय संगोष्ठी मे साठ शोधार्थियो ने पंजीकरण कराया। यहां कुल साठ शोध पत्रो का वाचन होगा। समापन चार बजे होगा।

साहित्य में महिलाओं की भागीदारी पर मंथन

मंचासीन साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद व कुलपति प्रो. सुरेन्द्र दूबे।

संगोष्ठी में मौजूद प्रतिभागी । • हिन्दुस्तान

संतकबीरनगर। निज संवाददाता

गोष्ठी

- नारी सशक्तीकरण के लिए समाज को विचार में लानी होगी समानता
- एचआरपीजी कॉलेज में आयोजित हुई दो दिवसीय गोष्ठी

एचआरपीजी कॉलेज खलीलाबाद में शुक्रवार को दो दिवसीय संगोष्ठी की शुरुआत हुई। स्त्री विमर्श: समकालीन साहित्य पर आधारित इस संगोष्ठी को देश के कई जाने- माने साहित्यकारों ने सम्बोधित किया। संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि विचारधारा और कर्म में हमेशा अंतर होता है। यह सही है कि स्त्री के साथ अन्याय व अत्याचार हुआ है। लेकिन हमारी विचारधारा और भारत का बहुसंख्यक समाज स्त्री के विरोध में नहीं है।

बतौर साहित्य अकादमी अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद ने कहा कि समाज को विचार और कर्म में समानता लानी होगी तभी स्त्री सशक्त होगी। अनुदान आयोग व हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्त्री विमर्श और समकालीन कथा साहित्य विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को विशिष्ट अतिथि व दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो चितरंजन मिश्र ने कहा कि विमर्श का आशय एक गहरे बदलाव से होता है। सभी विमर्श में एक नए समाज को गढ़ने की आकांछा होती है। इसीलिए स्त्री अपने अस्तित्व को लेकर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सशंकित रहती हैं। इसीलिए वर्तमान में स्त्री विमर्श की चर्चा इसलिये आवश्यक नहीं है कि वह केवल अस्तिव का प्रश्न है, अपितु साथ साथ उसकी निजता और अस्मिता को भी इस दौर में स्थापित करने का प्रयास करता है।

प्रो मिश्र ने कहा कि समानता का एजेंडा किसी सामाजिक व राजनैतिक एजेंडे में नहीं है। सुनियोजित तरीके से इसे हटा दिया गया है। आज स्त्री की वही छवि गढ़ी जा रही है जो बाजार गढ़ रहा है। हमारे व्यवहार व संस्कार में जब तक स्त्री समानता व अधिकारों की बात नहीं होगी। तब तक विमर्श बेमानी होगी।

महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा की स्त्री अध्ययन विभाग की अध्यक्ष प्रो. सुप्रिया पाठक ने कहा कि स्त्री के मुद्दे पर सार्थक लेखन की जरूरत है। हिंदी कथा साहित्य में महिलाओं को उसी रूप में शामिल करना चाहिए जिस रूप में उनकी स्थिति हो। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने कहा कि किसी भी समाज में कोई खोट है तो समाज के भीतर से ही उसकी आवाज उठनी चाहिये। हमे अपनी जड़ताओं को मिटाने का रास्ता अपनी विचार धारा से खोजना होगा। पश्चिम के चिंतन से नहीं उन्होंने कहा कि हमारे धर्म साहित्य व दर्शन ने हमेशा स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई लड़ी है। उन्होंने कहा कि स्त्री को देह और विज्ञापन की दुनिया से निकलने की जरूरत है। तीन तलाक पर विमर्श का उदाहरण देते हुए प्रो. दुबे ने कहा कि महिला अधिकारों की चर्चा महिलाओं के भीतर से शुरू हुई है। धर्म का हवाला देकर हम महिलाओं की आवाज दबा नही सकते। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। महाविद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया। प्राचार्य डॉ अजय कुमार पाण्डेय ने अतिथियों को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉ डी एन पाण्डेय, डॉ डीडी सिंह, पूर्व प्राचार्य डॉ अर्जुनराम त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य वीरेंद्र सिंह, पूर्व नियंता डॉ सूर्यनाथ पाण्डेय, डॉ वीके अग्रवाल, डॉ प्रताप विजय, डॉ पूर्णेश नारायण सिंह, डॉ अमित गौतम, डॉ वीके ओझा, डॉ अनुभव श्रीवास्तव, डॉ हेमन्त गौतम, डॉ मंजू मिश्रा, डॉ अमरनाथ पाण्डेय, अर्केंद्रमणि, कल्याणी शर्मा, सरिता राय, सहित छात्र-छात्रा व शोधार्थी मौजूद रहे।

अपना शहर
संतकबीरनगर

'शत्रुघ्न जी परोक्ष रूप से आप क्यों कांग्रेस का समर्थन करते हैं। भ्रष्टाचारियों और कालाधन वालों से बहुत प्रेम है तो कांग्रेस में ही चले जाइए।' —— मंगल पांडेय, भाजपा अध्यक्ष, बिहार

गोरखपुर। शनिवार • 26 नवम्बर • 2016 | राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.com

विचार व कर्म में समानता लाने पर ही होगी स्त्री सशक्त

■ संतकबीरनगर।

सहारा न्यूज ब्यूरो

विचारधारा और कर्म में हमेशा अंतर रहता है। यह सही है कि स्त्री के साथ अन्याय व अत्याचार हुआ है लेकिन हमारी विचारधारा और भारत का बहुसंख्यक समाज स्त्री के विरोध में नहीं है। साहित्य स्त्री के विरोध में नहीं है। समाज को विचार और कर्म में समानता लानी होगी तभी स्त्री सशक्त होगी। यह विचार हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय

हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय खलीलाबाद में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्त्री विमर्श और समकालीन कथा साहित्य विषयक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

खलीलाबाद में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्त्री विमर्श और समकालीन कथा साहित्य विषयक पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को मुख्य अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने संबोधित करते हुए व्यक्त किया।

उन्होंने कहा कि स्त्री पुरुष संबंधों पर संतुलित ढंग से सोचने की जरूरत है। स्त्री को आत्मनिर्भर और अधिकार संपन्न बनाने के लिए सामाजिक व राजनैतिक पहल जरूरी है। विशिष्ट अतिथि दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि विमर्श का आशय एक गहरे बदलाव से होता है। सभी विमर्श में एक नए समाज को गढ़ने की आकांक्षा होती है। इसीलिए, स्त्री अपने अस्तित्व को लेकर सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सशंकित रहती है। इसीलिए वर्तमान में स्त्री विमर्श की चर्चा इसलिये आवश्यक नहीं है कि वह केवल अस्तित्व का प्रश्न है अपितु साथ साथ उसकी निजता और अस्मिता को भी इस दौर में स्थापित करने का प्रयास करना है। प्रो. मिश्र ने कहा कि समानता का एजेंडा किसी समाजिक व राजनैतिक एजेंडे में नही है। सुनियोजित तरीके से इसे हटा दिया गया है। आज स्त्री की वही छवि गढ़ी जा रही है जो बाजार गढ़ रहा है। हमारे व्यवहार व संस्कार में जब तक स्त्री समानता और अधिकारों की बात नहीं होगी तब तक विमर्श बेमानी होगा। उन्होंने कहा कि यह विमर्श तब सार्थक होगा जब बुनियादी गांठो और जड़ताओं को खोलेंगे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करतीं महात्मा गांधी हिंदी विवि वर्धा की प्रो. सुप्रिया पाठक व अन्य वक्ता तथा उपस्थित प्राध्यापकगण व छात्र/छात्राएं। ·फोटो : सहारा

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा की स्त्री अध्ययन विभाग की अध्यक्ष प्रो. सुप्रिया पाठक ने कहा कि स्त्री के मुद्दे पर सार्थक लेखन की जरूरत है। हिंदी कथा साहित्य में स्त्रियों को उसी रूप में शामिल करना चाहिए जिस रूप में उनकी स्थिति हो। उन्होंने स्त्री विमर्श को साहित्य सिनेमा कहानी नाटक और लेखन से जोड़ते हुए स्त्री के वास्तविक स्थिति को स्पष्ट किया और महिला पुरुष के समता की बात की। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने कहा कि किसी भी समाज में कोई खोट है तो समाज के भीतर से ही उसकी आवाज उतनी चाहिये। हमें अपनी जड़ताओं को मिटाने का रास्ता अपनी विचारधारा से खोजना होगा। पश्चिम के चिंतन से नहीं उन्होंने कहा कि हमारे धर्म साहित्य व दर्शन ने हमेशा स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई लड़ी है। उन्होंने कहा कि स्त्री को देह और विज्ञापन की दुनिया से निकलने की जरूरत है। तीन तलाक पर विमर्श का उदाहरण देते हुए प्रो. दुबे ने कहा कि महिला अधिकारों की चर्चा महिलाओं के भीतर से शुरू हुई है। धर्म का हवाला देकर हम महिलाओं की आवाज दबा नहीं सकते।

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन कर किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया। प्राचार्य डा.अजय कुमार पाण्डेय ने अतिथियों को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के अध्यक्ष डा. प्रद्युम्न दुबे ने किया। इस अवसर पर डा.डी.एन. पाण्डेय, डा. डी.डी. सिंह, पूर्व प्राचार्य डा. अर्जुन राम त्रिपाठी, पूर्व प्राचार्य डा. वीरेंद्र सिंह, पूर्व नियंता डा. सूर्यनाथ पाण्डेय, डा. वी.के.अग्रवाल, डा. प्रताप विजय, डा. पूर्णेश नारायण सिंह, डा. अमित गौतम, डा. वी.के.ओझा, डा.अनुभव श्रीवास्तव, डा. हेमन्त गौतम, डा. मंजू मिश्रा, डा.अमरनाथ पाण्डेय, अकेंद्र मणि, कल्याणी शर्मा, सरिता राय, नीरज त्रिपाठी सहित महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं व शोधार्थी मौजूद रहे।

लखनऊ जेल से